L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
SUB - PSYCHOLOGY
B.A PART - 01
PSYCHOLOGY (HONOURS)
PAPER - 01
TOPIC - TRANSFER OF LEARNING.

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assist. Professor.
Subst. Teacher.
V.S.J. College, Rajnagar.
Madhubani (BIHAR)
pramodkumarsdbg2018
@gmail.com.

शिक्षण-स्थानांतरण सीखने के मनोविज्ञान की एक प्रमुख समस्या है। व्यक्ति अपने जीवन में जो कुछ भी सीखता है, उसका उपयोग वह बाद के जीवन में करता है। अर्थात् वह पहले सीखी गई योग्यता को बाद की परिस्थितियों में स्थानांतरित करता है। यदि ऐसा न होता तो सीखने की कोई उपयोगिता ही नहीं रह जाएगी।

हम अपने दैनिक जीवन में प्रायः ऐसा अनुभव करते हैं कि किसी एक ऐसी कार्य के संपादन की प्राप्त योग्यता, क्षमता या कौशल का प्रभाव बाद में किसी अन्य कार्य के संपादन पर पड़ता है। पूर्व के कार्य संपादन से बनी आदत का बाद के कार्य संपादन पर पड़नेवाले इस प्रभाव को ही स्थानांतरण प्रभाव कहते हैं। उदाहरण के लिए, साइकिल चलाना सीख लेने के फलस्वरूप जिस क्षमता का विकास होता है, उसका उपयोग दूसरे दो पहियोंवाली गाड़ियों को चलाना सीखने में किया जाता है। फलस्वरूप, पूर्व-आदत का उपयोग एक नए स्वरूप के कार्य के सीखने में किया जाता है, अतः शिक्षण-स्थानांतरण से हमारा अभिप्राय किसी एक कार्य के सीखने का किसी दूसरे कार्य पर पड़नेवाले प्रभाव से है।

स्थानांतरण के प्रकार :- किसी पूर्व शिक्षण का बाद में सीखी जाने वाली क्रिया पर पड़ने वाला प्रभाव निम्नलिखित में से किसी भी एक प्रकार का हो सकता है।

(1) धनात्मक शिक्षण-स्थानांतरण - जब किसी पूर्व अर्जित योग्यता का बाद में सीखी जानेवाली अथवा अर्जित की जानेवाली क्रिया पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है अर्थात् सहुलियत होती है, तब इस प्रकार के प्रभाव को

II

धनात्मक स्थानांतरण कहते हैं। इस तरह के प्रभाव के फलस्वरूप बाद में सीखी जानेवाली क्रिया को सीखने में आसानी होती है। इसलिए, इस प्रभाव को सहूलियत प्रदान करनेवाला प्रभाव कहते हैं उदाहरण के लिए ! - रेखागणित अच्छी तरह सीख लेने के फलस्वरूप त्रिकोणमिति की समस्याओं को सीखने में सहूलियत का होना धनात्मक स्थानांतरण है। इसी तरह जब हम किसी एक दुपहिया गाड़ी, जैसे - साइकिल चलाना सीख लेते हैं तब दूसरे प्रकार की दुपहिया गाड़ी जैसे स्कूटर या मोटरसाइकिल चलाना सीखने में सहूलियत का होना भी धनात्मक स्थानांतरण का ही उदाहरण है। धनात्मक स्थानांतरण की घटना को सीधी स्थानांतरण या आसानीकरण से उत्पन्न सुविधा भी कहा जाता है।

- निषेधात्मक स्थानांतरण - किसी पूर्व निर्मित योग्यता की बाद में अर्जित की जानेवाली योग्यता पर इस तरह के जब प्रभाव पड़ता है। इसे निषेधात्मक स्थानांतरण कहते हैं। इस दूसरे प्रकार के प्रभाव के फलस्वरूप एक प्राप्त योग्यता से बाद के कार्य संपादन अवरुद्ध होता है। अर्थात दूसरे कार्य पर योग्यता प्राप्त करने की प्रक्रिया में बाधा होता है इसलिए, इस प्रकार के अवरोध एक कार्य को सीखने के फलस्वरूप आदत के कारण होता है। इस लिए इसे आदत जनित अवरोध भी कहते हैं। उदाहरण स्वरूप BUT का सही उच्चारण सीख लेने के फलस्वरूप बच्चों को PUT का सही उच्चारण सीखने में कठिनाई होती है। इसी तरह पहले PALE मार्क को मुक्त-मुक्त लिखना सीख लेने के बाद दूसरे मार्क के मुक्त मुक्त लिखना सीखने में कठिनाई होती है। हम अपने दैनिक जीवन में प्रतिदिन अनुभव करते हैं कि कोई ड्राइवर बायें ओर की स्टेयरिंग वाली गाड़ी चलाने की आदत हो जाने पर दायें ओर की स्टेयरिंग वाली गाड़ी को चलाने में असुविधा अनुभव करता है।

शून्य प्रभाव - (zero effect) :- जब एक अर्जित योग्यता बाद में अर्जित की जानेवाली योग्यता पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डालता,

Scanned with CamScanner

तब इसे हम शून्य प्रभाव कहते हैं। अर्थात यहाँ पूर्व शिक्षण न तो बाद के शिक्षण में कोई प्रोत्साहन देता है। और न कोई अवरोध ही उत्पन्न करता है।

निषेधात्मक एवं धनात्मक स्थानांतरण के मिश्रित।
कुछ स्थितियाँ ऐसी भी होती हैं। जहाँ एक ही कार्य पर प्रतियोगिता योजना या शिक्षण के बाद में अर्जित या सीखी जानेवाली क्रिया पर, धनात्मक एवं निषेधात्मक दोनों प्रकार मिश्रित रूप से पड़ता है। इसे मिश्रित स्थानांतरण कहते हैं। उदाहरण के लिए भारत के किसी व्यक्ति ने संचालित मशीन पर ड्राइव करना सीखा है; अब यदि उसे अमेरिका की दायें ड्राइवसीट पर ड्राइव करना पड़ता है, तब उसे टकराव में कहीं कहीं पर कठिनाई या असुविधा एवं सहूलियत या सुविधा दोनों प्रकार के अनुभव होंगे। इसी तरह का बात दायें से बाईं होनेवाली गाड़ी के चालक को जब स्वतः बाईं होनेवाली गाड़ी चलानी पड़ती है, तब उसे कुछ सुविधा कुछ असुविधा दोनों का अनुभव होता है।

द्विपक्षीय स्थानांतरण (Bi-lateral Transfer)

धनात्मक स्थानांतरण का एक स्वरूप शारीरिक अवयवों की कार्यक्षमता पर देखा जाता है। द्विपक्षीय स्थानांतरण शारीरिक क्रिया-प्रणाली से संबद्ध है। स्थानांतरण की यह घटना शरीर के द्विपक्षीय कार्य-प्रणाली के नियमों द्वारा अपने आप वाले स्वतः संचालित होती है। इस प्रकार के स्थानांतरणों में शरीर के किसी एक भाग के अवयवों द्वारा अर्जित कौशल अथवा योग्यता शरीर के दूसरे तरफ के पूरक अवयवों में स्वतः स्थानांतरित हो जाते हैं।
इस तरह के स्थानांतरण के फलस्वरूप शरीर की असमानता भी कम उस

कार्य को करने में समर्थ होता है। सिद्ध करता
यह कारण है कि कोई एक भाग सुगमता रहता है।
उदाहरण के लिए दाएँ हाथ से लिखने की
आदत को ले तब! यह देखा जाता है कि दाएं
हाथ से अर्जित योग्यता का कुछ न कुछ अंश,
बाएँ हाथ में भी हस्तांतरित हो जाता है।
अतः मानव बाएँ हाथ से भी लिखने का किया
करने में समर्थ हो सकता है। और केवल
थोड़े से ही प्रयासों से बाएं हाथ की
निपुणता को दाएं हाथ के बराबर बढ़ाया
जा सकता है। इसलिए स्थानांतरण की घटना
की नींव का हम मनोविज्ञान में आसानी
से कर सकते हैं।

Dr. Pramod Kumar Sachu
Date - 14/07/2020
Sub. Psychology (H)